ऋण से मुक्त	ऋणमुक्त	जाति से बाहर	जातिबाहर
धन से हीन	धनहीन	धर्म से विमुख	धर्मविमुख
देश से निकाला	देशनिकाला	कर से छूट	करछूट
वृक्ष से (गिरा हुआ) पतित	वृक्षपतित	भय से मुक्त	भयमुक्त
स्वर्ण से भ्रष्ट	स्वर्गभ्रष्ट	प्रिय से वियोग	प्रियवियोग

(5) सम्बन्ध तत्पुरुष—इसके दोनों पदों के मध्य सम्बन्ध कारक के चिह्न 'का', 'की', 'के' का लोप रहता है। जैसे—

राजा का कुमार	राजकुमार	भवन का स्वामी	भवनस्वामी
राष्ट्र का ऋण	राष्ट्रऋण	नगर का वासी	नगरवासी
गंगा का जल	गंगाजल	देश का बंधु	देशबंधु
अमृत की धारा	अमृतधारा	सभा के पति	सभापति
राजा की कन्या	राजकन्या	दीनों के बंधु	दीनबंधु
घोड़ों की दौड़	घुड़दौड़	कन्या का दान	कन्यादान
नगर का सेठ	नगरसेठ	हिम का आलय	हिमालय
राष्ट्र का पिता	राष्ट्रपिता	राजा का भवन	राजभवन
पिता का गृह	पितृगृह	देवों का ईश्वर	देवेश्वर
सूर्य का प्रकाश	सूर्यप्रकाश	जन का कोलाहल	जनकोलाहल

(6) अधिकरण तत्पुरुष—इसके दोनों पदों के मध्य अधिकरण कारक के चिह्न 'में' या 'पर' का लोप रहता है। जैसे—

पद पर आसीन	पदासीन	कार्य में कुशल	कार्यकुशल
विश्व में विख्यात	विश्वविख्यात	वन में वास	वनवास
शरण में आगत	शरणागत	ध्यान में मग्न	ध्यानमग्न
आप पर बीती	आपबीती	कर्म में लीन	कर्मलीन
गृह में प्रवेश	गृहप्रवेश	मध्य में स्थित	मध्यस्थ
जल में मग्न	जलमग्न	दृष्टि में गत	दृष्टिगत
नरों में श्रेष्ठ	नरश्रेष्ठ	अश्व पर आरूढ़	अश्वारूढ़
शीर्ष पर स्थित	शीर्षस्थ	निद्रा में मग्न	निद्रामग्न
पुरुषों में उत्तम	पुरुषोत्तम	सर्व में श्रेष्ठ	सर्वश्रेष्ठ

नञ् तत्पुरुष—अभाव, न्यूनता या निषेध के अर्थ में शब्द के पहले अ, अन या न लगाकर जो समास बनाया जाता है, उसे 'नञ् तत्पुरुष' कहते हैं।

समस्त पद	मूल शब्द	समस्त पद	मूल शब्द
न नीति	अनीति	न उदार	अनुदार
न योग्य	अयोग	न अंत	अनंत
न पूर्व	अपूर्व	न बला	अबला
न धर्म	अधर्म	न आदर	अनादर
न संभव	असंभव	न आचार	अनाचार
न सुना	अनसुना	न आवश्यक	अनावश्यक
न देखा	अनदेखा	न पढ़ा	अपढ़
न आदि	अनादि	न सुलझा	अनसुलझा

(3) कर्मधारय समास

जिस समास में प्रथम पद विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है या एक उपमेय और दूसरा उपमान होता है, वह कर्मधारय समास कहा जाता है। इसका दूसरा पद प्रधान होने से इसे तत्पुरुष का भेद भी माना जाता है।

समस्त पद
विशेषण-विशेष्य
कृष्ण पक्ष
श्वेताम्बर
दुष्कर्म
नीलकमल
रक्तकमल
खाद्यान्न
पीताम्बर
महर्षि
मंदबुद्धि
उपमेय-उपमान
कर्मधारय के इस
जाए)। इसमें या तो उ
लौह-वक्ष
भवसिन्धु
विशेष—इस सम
है। जैसे—
हिमधवल
(यहाँ 'हिम' उप
पुरुषरत्न
मेघश्याम
कमलनयन
लौहपुरुष
कमलकोमल
जिस समास का
कहते हैं। इस समास
त्रिलोक
पक्षद्वय
चौराहा
षट्रस
सप्तर्षि
चौमासा
पंचवटी
नवरत्न
त्रिफला
चौपाई
चतुर्भुज